International Journal of Applied Research 2015; 1(8): 83-84

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(8): 83-84
www.allresearchjournal.com
Received: 28-05-2015
Accepted: 30-06-2015

डॉ0 शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय ढलियारा
कांगड़ा हिमाचल प्रदेश

Correspondence:
डॉ0 शिवदत्त शर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय ढलियारा
कांगड़ा हिमाचल प्रदेश

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और आधुनिक हिन्दी साहित्य

डॉ0 शिवदत्त शर्मा

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र अलौकिक प्रतिभा के स्वामी थे। हिन्दी साहित्य में वही एक मात्र ऐसे लेखक कवि और चिन्तक हैं जिन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में सफलता पूर्वक लेखनी चलाई तथा अपने नाम को स्थापित किया। सच्चे देशभक्त एवं बहुआयामी प्रतिभा के स्वामी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हिन्दी साहित्य के जाने माने स्तम्भ माने जाते हैं। काव्य एवं अन्य साहित्यिक विधाओं मेंउन्होंने पूर्ण अधिकार से लेखनी चलाईं। उनकी सबसे बडी देन हिन्दी गद्य के रूप में हमारे समक्ष उभरती है। अनेक गद्यात्मक विधाओं निबन्ध उपन्यास कहानी एवं एकांकी आदि सभी साहित्यिक विधाओं में उन्होंने खूब लेखनी चलाईं तथा हिन्दी गद्य के विकास में न केवल महत्वपूर्ण भूमिका निभाई अपितु हिन्दी गद्य के प्रतिमान और मानक भी स्थापित किए जिससेआगे चलकर हिन्दी गद्य का निखरा हुआ रूप हमारे सामने उपस्थित है। व्रज से खडी बोली की ओर लेखकों को मोडने में उनका योगदान महत्वपूर्ण है।मात्र 15वर्ष की आयु में साहित्य की सतत सेवा में संलग्न हो गए और अपनी आयु के 18वें वर्ष वचनसुधा हिन्दी पत्र प्रारम्भ किया जिसमें अनेक विद्वानों की रचनाएं प्रकाशित हुईं। भारतेन्दु ऐसे साहित्यकार थे जिन्होंने व्रज भाषा के परिष्कृत रूप को अपनाते हुएउर्दु अग्रेजी केप्रचलित शब्दों का प्रयोग करके इसे आधुनिक हिन्दी के लिए आधार दिया। भारतेन्दुयुग जन जागरण का युग था। इसयुगमेंसामाजिक साहित्यिक राजनीतिक धार्मिक जीवन में क्रांति आई। इस युग में वैचारिक अभिव्यक्ति का माध्यम गद्य बना। भारतेन्दु युग पुनर्जागरण का काल था।

भारतेन्दु युग का उदय– आधुनिक हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम युग भारतेन्दु युग ही है। इसयुग का उदय 18 50ई0 से 1900 ई0 तक माना जाताहै। हिन्दी साहित्य का श्रीगणेश भी उन्होंने किया। निस्सरिन्देह भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के मुकुट मणि हैं। उन्हें इस कालकाप्रवर्तक माना जाता है। उन्होंने अनेक पत्रपत्रिकाएं प्रकाशित करके कवि गोष्ठियों का आयोजन करके और साहित्यकारों की धनधान्य से सेवा करके आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया। भारतेन्दु की समस्त रचनाएं लगभगं 238 के आसपास हैं। गद्यभाषा का वास्तविक रूप–नाटकों के अतिरिक्त भारतेन्दु ने अनेक छोटे बडे लेख उपाख्यान लिखे;जिनमें उनके गद्य का अधिक निखरा हुआ रूप देखने को मिलता है। भारतेन्दु की गद्य–भाषा का वास्तविक रूप भीइन्हीं रचनाओं में प्रयुक्त हुआ। ये गद्य रचनाएं तीन वर्गो में रखी जा सकती हैं।

निबन्ध उपन्यास और गद्यगीत।

1. निबन्ध– हिन्दी में निबन्ध लेखन कला का कोई स्वरूप भारतेन्दु से पूर्व सामने नहीं आता। भारतेन्दु ही हिन्दी गद्य की अन्य सभी विधाओं के समान निबन्धों के भी जनक थे। सर्वप्रथम हिन्दी निबन्धों का रूप हमें भारतेन्दु द्वारा प्रकाशित सम्पादित पत्रों के लेखों में देखने को मिलता है। इसी प्रकार के अन्य बहुत से छोटेबडे लेख उनकेनिबन्धों के अन्तर्गत रखे गए हैं। भारतेन्दु के निबन्धों को कई वर्गों में रखा जा सकता है। इनका विषय इतिहास;चरित्र;धर्म;आख्यान यात्रा;पत्र तथाअन्य सामाजिक–राजनैतिक समस्याएं हैं। इस दृष्टि से भारतेन्दु के निबन्धों को ऐतिहासिक;सांस्कृतिक;धार्मिक यात्रासम्बन्धी आदि भिन्न भिन्न वर्गों मेंरखा जा सकता है। उनके निबन्धों में बूंदीकाराजवंश सरयूपारकीयात्रा अग्रवालोंकीउत्पत्ति आदि विशेष प्रसिद्ध हैं।
2. उपन्यास–भारतेन्दुकेप्रमुख उपन्यासों के विषय पौराणिक सामाजिकऔरऐतिहासिक हैंतथा इनकी भाषा व्यावहारिक है। मदालसोपाख्यान और चन्द्रप्रभापूर्णप्रकाश मेंइसी प्रकार कीभाषा के दर्शन होते हैं। इन रचनाओं मेंउपन्यासों का वास्तविक रूप न हो कर आख्यायिका–कला का प्रारंभिकरूप भी देखने को मिलता है।
3. गद्यगीत–भारतेन्दु के कविता संग्रहों और नाटकों के सम्पूर्ण संग्रह को गद्यगीत के अन्तर्गत रखा जा सकता है। इन रचनाओं में भावुकसमर्पण और भाषामाधुर्य के गुणों का अच्छा समावेश हुआ

है। भारतेन्दु के गद्य की भाषा–शैली– भारतेन्दु की गद्य भाषा हिन्दी गद्यके प्रारम्भिक विकास की भाषा है। उनकीभाषा में अद्भुत प्रतिभा का परिचय भी मिलता है। हिन्दी गद्य के प्रारम्भिक रूप को भारतेन्दु ने अपनी प्रतिभा से सजायासंवारा और उसकास्वरूपस्थिर किया। भारतेन्दु की भाषा मुहावरेदार होने के साथसाथ सजीव भी है। उनकीभाषामेंउर्दु अग्रेजी आदि अन्य भाषाओं के उन शब्दोंका समावेश भी है जोजनता की सामान्य बोलचाल की भाषा में घुलमिल गए थे। कहीं कहीं संस्कृत गर्भित भाषा का प्रयोग भी उन्हांने किया है परन्तु भाषा की प्रारम्भिक अवस्थामें कुछ दोष भी देखे जा सकते हैंजो स्वाभाविक भी है क्योंकि हिन्दी गद्य का यह प्रारम्भिक साहित्यिक स्वरूप है।

हिन्दीगद्यके विकास में भारतेन्दु का योगदान–हिन्दी गद्यके विकासमेंभारतेन्दु का योगदान प्रशंसनीयएवं अद्वितीय रहा है। उन्हेंहिन्दी गद्य का जनक माना जाता है। हिन्दी गद्यके जिस स्वरूप का आरम्भ सदासुखलाल सदलमिश्र लल्लूलाल और इंशाअल्लाखां की रचनाओं में हुआ उसेस्थिरता एवंनिश्चितस्वरूप देने का श्रेय भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र को है।

युगप्रवर्तक भारतेन्दु–भारतेन्दु वर्तमान हिन्दीगद्यकेप्रवर्तकहैंउन्होंनेजिस गद्यकीरचनाकी वहअद्भुत है। निस्सन्देह भारतेन्दु युग प्रवर्तकऔर युगान्तरकारी सर्जक कलाकार हैंतथा आधुनिक हिन्दी साहित्य में एक नई एवं स्वस्थ चेतना के जन्मदाता हैं। भारतेन्दु ने सरल सुगम्य एवं सुबोध्य भाषा हिन्दी जगत को दी। हिन्दीखडी बोली को परिष्कृत करने का श्रेय उन्हें ही है। कविता भी उनके ही द्वारा नईचाल में ढली। मुंशी सदासुखलाल कीभाषा साधु होते हुए भी पंडिताउपन लिए थी। लल्लूलालकीभाषा में ब्रजभाषा का पुट था। राजालक्ष्मणसिंह कीभाषा विशुद्ध और मधुर तो अवश्यथी परन्तुआगरे की बोलचाल का पुट उसमें कम था। भाषाका निखरा हुआ शिष्ट सामान्यरूप भारतेन्दु की कलाके साथ ही प्रकट हुआ। भारतेन्दु हिन्दीको न तो संस्कृत गर्भित बनाना चाहते थे न उर्दुमय वरन् वे उसे उसका निजी रूप ही देना चाहते थे जिसे आम जनता भी समझ सके।

भारतेन्दुयुगयुगान्तर के साहित्यकार– भारतेन्दु अलौकिक प्रतिभा के स्वामी थे उन्होंने शिल्प केक्षेत्र में भी नए नए प्रयोग किए। नाटकों के निर्माण और मिें रंगमंच का निर्माण हुआ। उनकी रचनाओं को युगोंयुगों तक याद किया जाएगा। स्वतंत्र व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा–हिन्दी साहित्य वै आधुनिक काल के प्रारम्भिक युग में सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उनका व्यक्तित्व सबसे अधिक प्रभावशाली था। उनके पदार्पण के साथ ही हिन्दी का आधुनिक रूप निश्चित हुआ तथाउसकेस्वतंत्र व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा हुई। इसतरह भारतेंदु के योगदान से यह स्पष्ट हो जाता हैकि उनका साहित्य को कितना बडा योगदान रहा। भारतेन्दु काल व्यापक जनजागरण का काल था जिसमें हिन्दी भाषा और साहित्य की बहुत उन्नति हुई।

युगीन भावनाओं का वाहक–हिन्दी भाषा और साहित्य के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से उनकी तुलना में कोई अन्य साहित्यकार नहीं ठहरता। जनजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु ने अपने साहित्य के माध्यम से जनचेतना को जगाया। केवल उनके साहित्य ने ही जनजीवन एवं साहित्य में जो चेतना ला दीवह पूर्व कालीन सामूहिक प्रयत्नों से भी संभव न थी। भारतेन्दु के काव्य में उत्कृष्ट देश भक्ति और वास्तविक राष्ट्रीयता झलक उठती है। खडी बोलीका अग्रदूत– हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल के प्रारम्भ में जब राजा लक्ष्मण सिंह तथा शिवप्रसाद सितारे हिन्द हिन्दी भाषा सम्बन्धी दो भिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहे थे उस समय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भाषा का शिष्ट और परिमार्जित रूप जनताके सामने रखा। उनकी भाषामें न तो कठिन तत्सम शब्दों का प्रयोग है और न तो अप्रचलित शब्दों का। विदेशी शब्दों के साथ साथ उन्होंने कहावतों तथा मुहावरों का सुन्दर प्रयोग किया है। उन्होंने खडीबोलीकाविकास अपने काव्य मेंकरकेआम जनता को प्रभावित किया। उन्होंने स्पष्ट कहा है– निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।

स्वस्थ हास्य विनोद–भारतेन्दु विनोद और स्वस्थहास्य का खजाना थे। उनके ये गुण साहित्य में भी देखे जा सकते हैं। उन्होंनेअपने मित्रों को भी स्वस्थ हास्य विनोदकीरचनाओं के लिए प्रोत्साहित किया। कहा जाता है किउनकायुग भी हास्य विनोद और मौज का युग था। इनकीरचनाओंमेंभी हास्य के माध्यम सेइनकी राष्ट्रीय भावना ही बोलती है। लोक–साहित्य –अनेक स्थानों के भ्रमणसे भारतेन्दुइस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है। जबतक उन्हें जगायानहीं जा सकता,देश नहीं जाग सकता। जब तक उनका उद्धार और पुनर्संस्कार नहींकियाजाता देश की उन्नति नहीं हो सकती। यही कारण है कि उन्होंने स्वयं जनजीवनके निकटआने के लिए लोक साहित्य की रचना की और अन्य लेखकों को भी इस दिशा में प्रोत्साहित किया।

लोकभाषा–भारतेन्दु की भाषा को लोक भाषा का नाम दियागया है। उन्होंने अपना सारा गद्यसाहित्य औरकाव्य लोकभाषा में लिखा। भारतेन्दुजी नेउसभाषा का प्रयोग किया जिसे जनताआसानी से समझ सकतीथी जिसे खडी बोली के नाम से जाना जाता है। डा् रामविलास शर्मा के शब्दोंके अनुसार, भारतेन्दु स्वदेशी आन्दोलन के ही अग्रदूत न थे वे समाज सुधारकों मेंभी प्रमुख थे। स्त्री शिक्षा,विधवाविवाह,के वे समर्थक थे। उन्होंने अन्य समकालीन साहित्यकारोंके साथ मिलकर साहित्यको रीतिकालकी वासनाकी सरितासे निकालकर राष्ट्रप्रेम औरसमाजसुधारके पथपर डाल दिया। हिन्दी गद्यका विकास हुआ और व्रजकी जगह खडीबोली मुख्यभाषा बन गई जिसमें काव्य के साथ साथगद्यमें भी सुन्दर रचनाएं प्रकट होने लगीं।

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र भारतदुर्दशा
2. भारतेन्दु का गद्य साहित्य, समाजशास्त्रीय अध्ययन कमलदेव दुबे
3. रामचन्द्रशुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास